## अन्तोन चेख़ोव

# लाखी

कहा जाता है कि 'लाखी' कहानी में चेखोव ने पशुओं को साधनेवाले विख्यात सरकस कलाकार व्लादीमिर दूरोव के साथ हुई घटना वर्णित की है।

महान मानवतावादी लेखक चेखोव पशु-पक्षियों को बहुत प्यार करते थे। उनके घर में सदा कोई न कोई पशु-पक्षी रहते थे। इनमें डेक्शंड नस्ल के कुत्ते ब्रोम और खीना थे, दोगले पिल्ले लाखी और बेलालोबी (सफ़ेद माथेवाला) थे, एक सारस भी उन्होंने पाल रखा था। दूरोव चेखोव के अच्छे मित्र थे। उन्होंने पशुओं को साधने की नई विद्या की नींव रखी। इस विद्या की विशिष्टता यह थी कि दूरोव चाबुक की मदद से नहीं, बल्कि प्रेम एवं स्नेह से तथा प्रोत्साहन देकर जानवरों को तरह-तरह के करतब सिखाते थे। दूरोव के पोते-परपोते अब तक इस परम्परा को बनाए हुए हैं। वे सोवियत सरकस में काम करते हैं।

चेखोव को सरकस देखने का शौक़ था।

'लाखी' कहानी पहली बार 'नोवये व्रेम्या' समाचारपत्र में २५ दिसम्बर १८८७ को छपी। इसके पांच वर्ष पश्चात ही चेखोव इसे बच्चों के लिए पुस्तक के रूप में छाप सके। पुस्तक अत्यंत लोकप्रिय हुई। "खाने के समय... बच्चे एकटक मुझे देखते रहते हैं और इस इंतज़ार में रहते हैं कि मैं कोई बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण बात कहूंगा। उनके विचार में मैं मेधावी हूं, क्योंकि मैंने 'लाखी' की कहानी लिखी है"—अपने भाई को एक पत्र में चेखोव ने मज़ाक़ के साथ लिखा था। उनके जीवनकाल में (१८६०—१९०४) 'लाखी' के दस संस्करण छपे। आज तक यह सोवियत बच्चों की एक सबसे प्रिय पुस्तक है।

बच्चों को अन्तोन पाव्लोविच चेखोव की दूसरी कहानियां—'वान्का', 'भगोड़ा', 'स्तेपी', 'लड़के', 'घटना', 'नींद आ रही है' और 'बच्चे' भी बहुत पसंद हैं। सरल और सुंदर भाषा में लिखी इन कहानियों में लोगों और जीवन का गहरा ज्ञान है, हल्की उदासी का पुट लिए मृदु "चेखोवी" हास्य है और है ऐसे जीवन का स्वप्न, जो मानव के जीने योग्य हो, "अकलुष, सुंदर और काव्यमय" हो।

## १. बेहूदे तौर-तरीक़े

दोगली नस्ल की छोटी सी सुर्खी कुतिया, जिसकी थूथनी बिल्कुल लोमड़ी जैसी थी, फ़ुटपाथ पर आगे-पीछे दौड़ रही थी और बेचैन सी इधर-उधर देख रही थी। कभी-कभी वह रुक जाती, रोते हुए ठंड से अकड़ा एक पंजा या दूसरा पंजा ऊपर उठाती और यह समझने की कोशिश करती कि आख़िर वह भटक कैसे गई।

उसे अच्छी तरह यह याद था कि उसने दिन कैसे बिताया और कैसे आख़िर में इस अनजाने फ़ुटपाथ पर आ पहुंची।

दिन यों शुरू हुआ कि उसके मालिक लुका अलेक्सान्द्रिच नाम के तरखान ने कनटोप पहना, लाल कपड़े में लपेटकर लकड़ी की कोई चीज़ बगल में दबाई और चिल्लाया:

"लाखी, चल!"

अपना नाम सुनकर दोगली कुतिया ठिये के नीचे से निकली, जहां वह

छीलन पर सो रही थी, जिस्म तोड़ा और मालिक के पीछे हो ली। लुका अलेक्सान्द्रिच के ग्राहक बहुत ही दूर रहते थे, इसलिए उनके घर तक पहुंचने से पहले तरखान को कई बार भठियारख़ाने में जाना पड़ता था और बूंद-दो बूंद से गला तर करना पड़ता था। लाखी को याद था कि रास्ते में उसके तौर-तरीक़े ख़ासे बेहूदा रहे थे। इस ख़ुशी से कि मालिक उसे घुमाने ले जा रहा है, वह उछल-कूद रही थी, घोड़ा-ट्रामों के पीछे भौंकती हुई दौड़ती थी, अहातों में घुस जाती थी और दूसरे कुत्तों का पीछा करती थी। अक्सर वह तरखान की नज़रों से ओझल हो जाती। वह रुक जाता और ग़ुस्से में उस पर चीखता-चिल्लाता। एक बार तो चेहरे पर ऐसा भाव लाकर कि मानो उसे खा ही जाएगा; उसने लाखी का लोमड़ी जैसा कान मुट्ठी में भरकर ऐंठा और एक-एक शब्द पर ज़ोर देते हुए बोला :

"कमबख़्त! तेरा ... सत्या ... नास ... हो!"

ग्राहकों को सामान पहुंचाकर लुका अलेक्सान्द्रिच दो मिनट को बहन के घर गया, वहां चबैने के साथ कुछ पी; फिर जान-पहचान के एक जिल्दसाज़ के यहां गया, वहां से भठियारख़ाने में, भठियारख़ाने से एक और रिश्तेदार के यहां, वग़ैरह, वग़ैरह। संक्षेप में यह कि जब लाखी इस अनजान फ़ुटपाथ पर पहुंची तो शाम हो रही थी और तरखान नशे में धुत्त था। वह ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाते हुए आहें भर रहा था और बड़बड़ा रहा था :

"पाप में जन्मा मां ने गरभ में मेरे! ओह, हमारे पाप! पाप! अब चले जाते हैं सड़क पर, बत्तियां देख रहे हैं, मर जाएंगे, तो नरक की आग में जलेंगे।"

या फिर वह मस्ती में आ जाता, लाखी को अपने पास बुलाता और उसे कहता :

"अरी लाखी, तू तो बस एक जानवर है और कुछ नहीं। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौड़ी का बढ़ई।"

जब वह उससे यों बातें कर रहा था, तभी अचानक बैंड बजने लगा। लाखी ने सिर घुमाया और देखा कि सड़क पर सिपाहियों की एक टुकड़ी सीधी उसकी ओर बढ़ी आ रही है। लाखी बैंड-बाजे का शोर नहीं सह सकती थी,

वह उसे झिंझोड़ डालता था। लाखी बौखला उठी और किकियाने लगी। उसे यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि मालिक न तो डरा ही, न चीखा-चिल्लाया और भौंका ही, बल्कि मुंह फैलाकर मुस्कराने लगा, तनकर खड़ा हो गया और पूरे पंजे से सल्यूट मारा। यह देखकर कि मालिक तो विरोध कर नहीं रहा, लाखी और भी ज़ोर से रोने लगी, बदहवास हो गई और सड़क के दूसरी ओर भाग गई।

जब उसके होश ठिकाने आए, तो बैंड नहीं बज रहा था और सिपाही भी नहीं थे। वह सड़क पार करके उस जगह आई, जहां उसने मालिक को छोड़ा था, पर मालिक वहां था ही नहीं। वह आगे दौड़ी, फिर पीछे, एक बार फिर सड़क पार की, पर मालिक तो मानो ज़मीन में समा गया था। लाखी फ़ुटपाथ सूंघने लगी, ताकि मालिक की गंध से पता लगा सके कि वह किधर गया, पर कोई कमबख़्त इससे पहले रबड़ के नए गैलोश * पहने उधर से गुज़र गया था और अब सारी भीनी महकें रबड़ की बू से दब गई थीं, सो लाखी को कुछ पता न चल पा रहा था।

लाखी आगे-पीछे दौड़ रही थी, पर मालिक नहीं मिल रहा था और उधर अंधेरा होता जा रहा था। सड़क के दोनों ओर बत्तियां जल गईं, घरों की खिड़कियों में भी रोशनी हो गई। हिम के बड़े-बड़े फाहे गिर रहे थे और उनसे सड़क, घोड़ों की पीठें और कोचवानों की टोपियां सभी कुछ सफ़ेद रंग में रंगा जा रहा था, हवा में अंधेरा जितना गहराता जा रहा था, चारों ओर की वस्तुएं उतनी ही सफ़ेद होती जा रही थीं। लाखी के पास से, उसकी नज़रों के सामने अंधेरा करते हुए, उसे ठुकराते हुए अनजान ग्राहक लगातार आ जा रहे थे। ( लाखी सभी इन्सानों को दो बिल्कुल असमान हिस्सों में बांटती थी: एक थे मालिक और दूसरे ग्राहक। दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर था: मालिकों को उसे मारने-पीटने का हक़ था और ग्राहकों को वह खुद काटने का अधिकार रखती थी। ) सारे ग्राहक कहीं जाने की जल्दी में थे और कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था।

---

* बारिश के दिनों में चमड़े के जूतों के ऊपर पहने जानेवाली रबड़ की जूतियां। – सं०

जब बिल्कुल अंधेरा छा गया, तो लाखी हताश और भयभीत हो गई। वह किसी घर के दरवाज़े से सटकर बैठ गई और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। लुका अलेक्सान्द्रिच के साथ सारे दिन की इस "यात्रा" ने उसे थका डाला था, उसके कान और पंजे ठंड से अकड़ रहे थे और साथ ही उसे बड़े ज़ोरों की भूख लगी थी। सारे दिन में सिर्फ़ दो बार उसके मुंह में कुछ गया था: जिल्दसाज़ के यहां उसने थोड़ी सी लेई खाई थी और एक भठियारखाने में उसे सलामी का छिलका मिल गया था – बस और कुछ नहीं। अगर वह इन्सान होती तो शायद सोचती:

"नहीं, ऐसे जीना नामुमकिन है! इससे तो गोली मार लेना बेहतर है!"

## २. रहस्मय अजनबी

पर वह कुछ नहीं सोच रही थी और बस रोती जा रही थी। जब हिम के फाहों से उसकी सारी पीठ और सिर ढक गए और वह निढाल होकर ऊंघने लगी, तभी दरवाज़े की चिटकनी खुली, चरमराहट हुई और दरवाज़ा लाखी की बगल में आ लगा। वह उछलकर खड़ी हो गई। खुले दरवाज़े में से कोई आदमी निकला, जो ग्राहकों की श्रेणी का था। लाखी चिचियाई थी और उसके पैरों तले आ गई थी, इसलिए वह उसकी ओर ध्यान दिए बिना नहीं रह सकता था। वह लाखी पर झुका और पूछने लगा:

"अरे तू कहां से आई? चोट लग गई क्या? बेचारी कुतिया... अच्छा नाराज़ मत हो... मेरे से ग़लती हो गई।"

लाखी ने बरौनियों पर लटक रहे हिमकणों के पीछे से अजनबी की ओर देखा और अपने सामने एक नाटे से, गोल-मटोल आदमी को पाया। उसकी दाढ़ी-मूंछें साफ़ मुंडी हुई थीं और चेहरा भरा हुआ था। सिर पर वह ऊंचा टोप पहने था और उसके ओवरकोट के बटन खुले थे। उंगलियों से उसकी पीठ पर गिरा हिम झाड़ते हुए वह कहता जा रहा था:

"अरे, तू किकियाती क्यों है? तेरा मालिक कहां है? लगता है तू खो गई? बेचारी कुतिया! अब हम क्या करें?"

अजनबी की आवाज़ में अपनेपन और स्नेह का आभास पाकर लाखी ने उसका हाथ चाटा तथा और भी अधिक दयनीय स्वर में किकियाने लगी।

"है तो तू बड़ी प्यारी!" अजनबी ने कहा। "बिल्कुल लोमड़ी है!.. अच्छा, तो क्या करें? चल मेरे साथ ही चल! शायद तू किसी काम आ जाए... पुच-पुच!"

उसने लाखी को पुचकारा और हाथ से इशारा किया, जिसका सिर्फ़ एक मतलब हो सकता था: "चल!" और लाखी चल दी।

यही कोई आधे घंटे बाद वह एक बड़े से कमरे में बैठी थी और सिर एक ओर को झुकाए कौतूहल के साथ अजनबी को देख रही थी, जो मेज़ पर खाना खा रहा था। खाना खाते हुए वह लाखी की ओर भी कुछ टुकड़े फेंकता जा रहा था... पहले उसने उसे रोटी दी और पनीर का हरा छिलका दिया, फिर गोश्त की बोटी, आधा समोसा, मुर्गी की हड्डियां। लाखी भूख के मारे यह सब इतनी जल्दी खा गई कि स्वाद का उसे पता ही नहीं चला। जितना ज़्यादा वह खाती जा रही थी, उतनी ही उसकी भूख तेज़ हो रही थी।

उसे इस तरह टूट-टूटकर खाते देखकर अजनबी कह रहा था: "ओह, तेरे मालिक तुझे खाना नहीं देते लगते! निरा हड्डियों का पुतला है तू।"

लाखी ने बहुत खा लिया था, पर उसका पेट नहीं भरा था, बस खाने का खुमार चढ़ गया था। खाने के बाद वह कमरे के बीचोंबीच टांगें फैलाकर लेट गई। उसके सारे शरीर में मीठी कसक सी हो रही थी। वह दुम हिलाने लगी। उधर उसका नया मालिक आरामकुर्सी में बैठा सिगार पी रहा था और इधर वह दुम हिलाते हुए यह मसला हल कर रही थी कि कहां रहना बेहतर है—अजनबी के यहां या तरखान के घर? अजनबी के घर में कोई खास चीज़ नहीं है, आरामकुर्सियों, सोफ़े, लैम्प और कालीनों के अलावा उसके कमरे में कुछ भी नहीं है, कमरा खाली-खाली लगता है, तरखान का सारा घर चीज़ों से भरा हुआ है: उसके पास मेज़ है, ठिया है, छीलन का ढेर है, रंदे, रुखानियां, आंरियां हैं, पिंजड़े में चिड़िया है और लकड़ी का छोटा सा टब है... अजनबी के घर में किसी चीज़ की गंध नहीं आती, तरखान के घर में सदा धूल छाई रहती है और सरेस, वार्निश और छीलनों की बढ़िया गंध आती है। पर अजनबी

के यहां एक बहुत अच्छी बात है – वह खाने को बहुत कुछ देता है और इन्साफ़ से यह भी कहना चाहिए कि जब लाखी उसके सामने मेज़ तले बैठी थी और गदगद सी उसकी ओर देख रही थी, तो उसने एक बार भी उसे ठोकर नहीं मारी, पैर नहीं पटके और एक बार भी नहीं चिल्लाया: "धुत! कमबख़्त कहीं की!"

सिगार पीकर नया मालिक बाहर गया और दो मिनट में ही छोटा सा गद्दा उठाए लौट आया।

"ऐ, कुतिया, इधर आ," सोफ़े के पास एक कोने में गद्दा रखते हुए उसने कहा। "लेट जा यहां। सो जा!"

फिर उसने लैम्प बुझा दिया और बाहर चला गया। लाखी ने गद्दे पर लेटकर आंखें मूंद लीं। बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आई, वह भी जवाब में भौंकना चाहती थी, पर अचानक उसके मन पर गहरी उदासी छा गई। उसे लुका अलेक्सान्द्रिच और उसके बेटे फ़ेद्युश्का की, ठिये तले आरामदेह जगह की याद हो आई... उसे याद आया कि जाड़ों की लंबी शामों में, जब तरखान रंदा चला रहा होता था या ऊंचे-ऊंचे अख़बार पढ़ता था तो फ़ेद्युश्का अक्सर उसके साथ खेला करता था... वह उसकी पिछली टांगें पकड़कर उसे ठिये के नीचे से निकाल लेता और ऐसे-ऐसे तमाशे करता कि लाखी की आंखों आगे तितरियां नाचने लगतीं और सारे जोड़ दुखते। वह उसे पिछले पैरों पर चलाता, उसकी घंटी बनाता, यानी उसकी दुम पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाता, जिससे लाखी चीखती और भौंकती; वह उसे तम्बाकू सुंघाता... सबसे दर्दनाक यह खेल था: फ़ेद्युश्का गोश्त की बोटी को धागे में बांध देता और लाखी को देता, जब लाखी बोटी निगल जाती, तो वह ठहाके मारता हुआ उसके पेट में से बोटी निकाल लेता। यादें जितनी तीखी होती जा रही थीं, उतने ही उदास स्वर में वह ज़ोर-ज़ोर से किकिया रही थी।

परंतु शीघ्र ही उदासी पर थकावट और गर्माहट छा गई... लाखी को नींद आने लगी। उसकी कल्पना में कुत्ते दौड़ने लगे; वह झबरीला कुत्ता भी उनमें था, जिसे आज उसने सड़क पर देखा था, उसकी आंख पर सफ़ेद दाग़ था और नाक के पास बालों के गुच्छे। फ़ेद्युश्का हाथ में रुखानी उठाए उस कुत्ते

का पीछा करने लगा, सहसा उसके बदन पर भी झबरीले बाल उग आए, वह खुशी-खुशी भौंकने लगा और लाखी के पास आ पहुंचा। उन दोनों ने बड़े प्रेम से एक दूसरे की नाक सूंघी और बाहर सड़क पर दौड़ गए ...

## ३. नई और बड़ी अच्छी जान-पहचान

लाखी जब जागी तो उजाला हो चुका था और बाहर से ऐसा शोर आ रहा था, जैसा केवल दिन के समय होता है। कमरे में कोई भी न था। लाखी ने जिस्म तोड़ा, जम्हाई ली और उखड़ी-उखड़ी सी कमरे का चक्कर लगाने लगी। उसने सारे कोने और फ़र्नीचर सूंघा, ड्योढ़ी में झांककर देखा पर वहां कोई दिलचस्प चीज़ न मिली। ड्योढ़ी के दरवाजे के अलावा कमरे में एक और दरवाज़ा भी था। कुछ देर सोचने के बाद लाखी ने दोनों पंजों से उसे खरोंचा, खोला और अगले कमरे में चली गई। यहां एक पलंग पर फ़्लेनिल का कम्बल ओढ़े ग्राहक सो रहा था। वह पहचान गई कि यह कल वाला अजनबी ही है।

वह गुर्राने लगी, पर फिर कल का खाना याद करके दुम हिलाने और सूंघने लगी।

उसने अजनबी के कपड़े और बूट सूंघे और यह पाया कि उनसे घोड़े की तेज़ गंध आती है। इस कमरे में एक और दरवाज़ा था, वह भी भिड़ा हुआ था। लाखी ने उसे खरोंचा, छाती से उस पर ज़ोर डाला और खोल लिया। दरवाज़ा खुलते ही वहां से बड़ी अजीब सी गंध आई, जिससे लाखी एकदम चौकन्नी हो गई। उसे लग रहा था कि कोई अप्रिय घटना होगी। गुर्राते और इधर-उधर झांकते हुए वह मैले दीवारी कागज़ वाले छोटे से कमरे में घुसी और डर के मारे फ़ौरन पीछे हट गई। उसने एक बिल्कुल ही अप्रत्याशित और भयावह दृश्य देखा था। फ़र्श तक गर्दन और सिर झुकाए, पंख फैलाए एक हल्का सुरमई हंस फुफकारता हुआ सीधा उसकी ओर बढ़ता आ रहा था। एक ओर को गद्दे पर सफ़ेद बिल्ला लेटा हुआ था। लाखी को देखकर वह उछला, उसने पीठ कमान की तरह तानी, दुम ऊंची कर ली, रोयें खड़े किए और वह भी फुफकारने लगा। कुतिया खासी डर गई, पर वह यह दिखाना नहीं चाहती

थी, सो ज़ोर से भौंकती हुई बिल्ले की ओर लपकी ... बिल्ले ने पीठ और भी ज़्यादा तान ली, फुफकार भरी और पंजा लाखी के सिर पर मारा। लाखी झट से पीछे हट गई, चारों पैरों पर बैठ गई और ज़ोर-ज़ोर से चीखते हुए भौंकने लगी ; तभी हंस ने पीछे से आकर अपनी चोंच उसकी पीठ पर दे मारी। लाखी उछली और हंस पर झपटी ...

"क्या हो रहा है यह ?" ग़ुस्से भरी ज़ोरदार आवाज़ आई और गाउन पहने, दांतों में सिगार दबाए अजनबी कमरे में आ गया। "क्या है यह सब ? चलो अपनी-अपनी जगह।"

बिल्ले के पास आकर उसने उसकी पीठ पर ठोंगा मारा और कहा : "लेट जा, मुए !"

हंस की ओर मुड़कर वह चिल्लाया :

"इवान इवानिच, चलो अपनी जगह !"

बिल्ले ने चुपके से अपने गद्दे पर लेटकर आंखें मूंद लीं। उसकी थूथनी और मूंछों के भाव से लग रहा था कि वह ख़ुद भी इस बात पर ख़ुश नहीं है कि ताव में आकर लड़ने लगा। लाखी रोनी सी होकर किकियाने लगी, हंस ने अपनी गर्दन तान ली और जल्दी-जल्दी कुछ बोलने लगा। वह बड़े जोश से और साफ़-साफ़ कुछ कह रहा था, पर बिल्कुल कुछ भी समझ में न आता था।

"अच्छा, अच्छा !" मालिक ने जम्हाई लेते हुए कहा। "मिल-जुलकर रहना चाहिए।" उसने लाखी को सहलाया और बोलता गया : "तू डर नहीं ... यहां सब अच्छे हैं, कोई तुझे कुछ नहीं कहेगा। ठहर, तुझे हम पुकारेंगे कैसे ? नाम के बिना तो काम नहीं चल सकता।"

अजनबी थोड़ी देर सोचता रहा, फिर बोला :

"हुं, तेरा नाम होगा ... मौसी। समझी ? मौसी !"

और कुछ बार "मौसी, मौसी" कहकर वह बाहर चला गया। लाखी बैठ गई और देखने लगी। बिल्ला ज़रा भी हिले-डुले बिना गद्दे पर बैठा हुआ था और सोने का बहाना कर रहा था। हंस गर्दन तानकर और एक ही जगह पर पैर बदलते हुए बड़े ज़ोर-शोर से कुछ कहता जा रहा था। वह शायद बड़ा

अक्लमंद हंस था ; लंबा सा भाषण देकर वह शान के साथ पीछे हट जाता और ऐसे देखता मानो खुद ही अपने भाषण पर मुग्ध हो रहा हो ... उसकी बातें सुनकर और गुर्राहट से उसका जवाब देकर लाखी सारे कोने सूंघने लगी। एक कोने में छोटा सा टब रखा था, जिसमें उसे भीगे हुए मटर के दाने और रोटी के टुकड़े दिखे। उसने मटर चखा – अच्छा नहीं लगा, गीली रोटी के टुकड़े चखे – और खाने लगी। हंस ने इस बात का ज़रा भी बुरा नहीं माना कि अनजान कुतिया उसका खाना खा रही है, उल्टे वह और भी ज़ोर-शोर से बोलने लगा और अपना विश्वास दिखाने के लिए खुद भी वहां चला आया और मटर के कुछ दाने खा लिए।

## ४. अजूबे ही अजूबे

थोड़ी देर बाद अजनबी फिर आया और अपने साथ एक अजीब सी चीज़ लाया, जो दर जैसी थी। लकड़ी के जैसे-तैसे बने इस दर की आड़ी डंडी पर एक घंटी लटक रही थी और पिस्तौल बंधी हुई थी ; घंटी की लटकन और पिस्तौल की लिबलिबी से डोरी बंधी हुई थी। अजनबी ने इस दर को कमरे के बीचोंबीच रख दिया, बड़ी देर तक कुछ खोलता, बांधता रहा, फिर हंस की ओर देखकर बोला :

"इवान इवानिच, आइए !"

हंस उसके पास गया और प्रतीक्षा की मुद्रा में खड़ा हो गया।

"अच्छा, जी," अजनबी बोला, "तो शुरू से शुरू करते हैं। सबसे पहले झुककर आदाब बजाओ। जल्दी से !"

इवान इवानिच ने गर्दन तानी, चारों ओर सिर झुकाने लगा और पंजा पीछे उठा लिया।

"शाबाश ... अब ढेर हो जाओ !"

हंस पीठ के बल लेट गया और पंजे ऊपर उठा लिए। कुछ और ऐसे ही मामूली से तमाशों के बाद अजनबी ने सहसा अपना सिर पकड़ लिया, चेहरे पर डर का भाव ले आया और चिल्लाया :

"आग ! आग ! बचाओ !"

इवान इवानिच दौड़ा-दौड़ा दर के पास गया, डोरी चोंच में पकड़ी और घंटी बजाने लगा।

अजनबी बहुत खुश हुआ। उसने हंस की गर्दन सहलाई और बोला :

"शाबाश, इवान इवानिच ! अच्छा, तुम यह कल्पना करो कि तुम जौहरी हो और हीरे-जवाहरात बेचते हो। अब यह कल्पना करो कि तुम दुकान पर आए और देखा वहां चोर घुस आए हैं। ऐसी हालत में तुम क्या करोगे ?"

हंस ने दूसरी डोरी चोंच में पकड़ी और खींच दी, तभी जोरदार धमाका हुआ। लाखी को घंटी की आवाज़ बड़ी अच्छी लगी थी और धमाके से तो वह बावली हो उठी, दर के चारों ओर दौड़ने और भौंकने लगी।

"मौसी, चलो अपनी जगह !" अजनबी चिल्लाया। "चुप रहो !"

इवान इवानिच का काम इस धमाके के साथ ही खत्म नहीं हुआ। इसके बाद घंटे भर तक अजनबी उसे अपने इर्द-गिर्द बागडोर पर दौड़ाता रहा और कोड़ा सटकारता रहा। हंस को दौड़ते हुए बाधाओं के ऊपर से और छल्ले में से कूदना पड़ता था, सीखपा होना पड़ता था, यानी दुम पर बैठकर पंजे हवा में हिलाने पड़ते थे। लाखी टकटकी लगाए इवान इवानिच को देख रही थी, वह खुशी से भौंकने लगती और उसके पीछे दौड़ने लगती। आखिर हंस को भी और खुद को भी थकाकर अजनबी ने माथे से पसीना पोंछा और आवाज़ दी :

"मार्या, ज़रा खव्रोन्या इवानव्ना को तो बुलाओ इधर !"

थोड़ी देर में घुरघुराहट सुनाई दी ... लाखी गुर्राने लगी, बड़ी बहादुर सी बन गई, पर फिर भी अजनबी के पास आ गई। दरवाज़ा खुला, किसी बुढ़िया ने अंदर झांककर देखा और कुछ कहकर एक काले से, बहुत ही बदसूरत सूअर को अंदर घुसेड़ दिया। लाखी की गुर्राहट की ज़रा भी परवाह न करते हुए सूअर ने अपना थूथना ऊपर उठाया। लगता था कि वह अपने मालिक, बिल्ले और इवान इवानिच को देखकर बड़ा खुश है। उसने बिल्ले के पास आकर अपना थूथना उसके पेट में लगाया, फिर हंस से कुछ बातें करने लगा। यह सब वह जिस तरह कर रहा था और जैसे अपनी दुम हिला रहा था,

उससे लगता था कि वह नेक स्वभाव का है। लाखी ने तुरंत ही भांप लिया कि ऐसों पर गुर्राना और भौंकना बेकार है।

मालिक ने दर हटाया और चिल्लाया :

"फ़्योदर तिमफ़ेइच, पधारिए!"

बिल्ला उठा, अलसाहट के साथ जिस्म तोड़ा और अनमना सा, मानो अहसान करता हुआ सूअर के पास आ गया।

"तो चलो, मिस्री पिरामिड से शुरू करें," मालिक बोला।

वह बड़ी देर तक कुछ समझाता रहा, फिर बोला : "एक ... दो ... तीन ..." उसके तीन कहते ही इवान इवानिच ने पंख फड़फड़ाए और सूअर की पीठ पर जा सवार हुआ ... जब वह पंखों और गर्दन से संतुलन करता हुआ सूअर के कड़े बालों वाली पीठ पर टिक गया, तब फ़्योदर तिमफ़ेइच सुस्ताया हुआ सा, यह दिखाते हुए कि उसे इस सब तमाशे से कुछ नहीं लेना-देना है, कि यह सब बेकार की बातें हैं, सूअर की पीठ पर चढ़ गया, फिर अनिच्छा से हंस पर जा चढ़ा और पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। इसे ही अजनबी मिस्री पिरामिड कहता था। लाखी बेहद खुश हो उठी, किकियाई, पर तभी बिल्ले ने जम्हाई ली और संतुलन खो बैठने से वह हंस की पीठ से गिर गया। इवान इवानिच भी डगमगाया और गिर पड़ा। अजनबी चिल्लाने और हाथ झटकने लगा, फिर से कुछ समझाने लगा। घंटे भर तक पिरामिड बनाते रहने के बाद अथक मालिक इवान इवानिच को बिल्ले की सवारी करना सिखाने लगा, फिर बिल्ले को सिगार पीना, इत्यादि।

आखिर अजनबी ने माथे से पसीना पोंछा और बाहर निकल गया। और इस तरह यह पाठ खत्म हुआ। फ़्योदर तिमफ़ेइच ने घिन के साथ फुफकार भरी, गद्दे पर लेट गया और आंखें मूंद लीं। इवान इवानिच टब की ओर चल दिया और सूअर को बुढ़िया ले गई। अनगिनत नई छापों के कारण दिन बीतते पता भी न चला। शाम को लाखी का गद्दा मैले दीवारी काग़ज़ वाले कमरे में रख दिया गया और रात उसने फ़्योदर तिमफ़ेइच तथा हंस के साथ काटी।

## ५. वाह ! क्या कमाल है !

एक महीना बीत गया।

लाखी इस बात की आदी हो गई थी कि रोज़ शाम को उसे मज़ेदार खाना मिलता था और मौसी कहकर पुकारा जाता था। अजनबी और नए साथियों की भी वह आदी हो गई थी। ज़िंदगी बड़े मज़े से बीत रही थी।

सभी दिन एक ही तरह से शुरू होते थे। आम तौर पर इवान इवानिच सबसे पहले जागता था। वह तुरंत ही मौसी या बिल्ले के पास जाता, गर्दन तानकर बड़े ज़ोर-शोर से कुछ कहने लगता, पर पहले की ही भांति उसकी कोई बात समझ में न आती। कभी-कभी वह अपनी लंबी गर्दन ऊपर उठाकर लंबे एकालाप करता। पहले कुछ दिन तक तो लाखी यह सोचती रही कि वह बहुत अक्लमंद है, इसीलिए इतना बोलता है, पर थोड़े दिन बीतने पर उसके मन में हंस के लिए कोई आदर न रहा। अब जब वह अपना लंबा भाषण झाड़ता हुआ उसके पास आता, तो वह दुम नहीं हिलाती थी, बल्कि उसके साथ निरे बक्की जैसा ही बर्ताव करती थी, जो सबको तंग करता है, सोने नहीं देता। उसका कोई लिहाज़ किए बिना वह गुर्राकर उसे झाड़ देती थी।

जनाब फ़्योदर तिमफ़ेइच के तौर-तरीक़े बिल्कुल ही और थे। वह सुबह जागने पर कोई आवाज़ नहीं करता था, हिलता-डुलता भी नहीं था और न आंखें ही खोलता था। वह तो बड़ी ख़ुशी से जागता ही न, क्योंकि साफ़ लगता था कि उसे इस ज़िंदगी से कोई लगाव नहीं है। किसी बात में उसकी दिलचस्पी न थी, हर चीज़ को वह लापरवाही और आलस्य से देखता था, किसी की उसे कोई परवाह न थी, यहां तक कि अपना स्वादिष्ट खाना खाते हुए भी वह घिन से फुफकारता रहता था। लाखी सुबह उठकर कमरों का चक्कर काटने और कोने सूंघने लगती। सिर्फ़ उसे और बिल्ले को सारे घर में घूमने की इजाज़त थी। इवान इवानिच को मैले दीवारी क़ागज़ वाले कमरे की दहलीज़ लांघने का हक़ नहीं था और सूअर अहाते में किसी कोठरी में रहता था, केवल पाठ के समय अंदर आता था। मालिक देर से उठता था। जी भर के चाय पीने के बाद वह तुरंत ही अपने तमाशों में लग जाता। रोज़ाना कमरे में दर, कोड़ा

और छल्ले लाए जाते और रोज़ाना प्राय: वही सब दोहराया जाता। पाठ तीन-चार घंटे चलता। कभी-कभी तो इसके बाद फ्योदर तिमफ़ेइच यों लड़खड़ाता, जैसे कि नशे में हो, इवान इवानिच अपनी चोंच खोलकर हांफता, मालिक का चेहरा लाल सुर्ख़ हो जाता और उसके माथे से पसीना पोंछे न पोंछा जाता। इन पाठों और खाने की बदौलत दिन तो बड़े रोचक रहते, पर शाम को लाखी ऊबती रहती। आम तौर पर शाम को मालिक हंस और बिल्ले को लेकर चला जाता था। अकेली रह जाने पर मौसी अपने गद्दे पर लेट जाती और उदास होने लगती... उस पर अनजाने ही धीरे-धीरे उदासी छा जाती थी, जैसे कमरे में अंधेरा छाता है। इसकी शुरुआत यों होती कि कुतिया का न भौंकने, न कुछ खाने या कमरों में दौड़ने का और यहां तक कि देखने तक का मन न करता। फिर उसकी कल्पना में दो अस्पष्ट सी आकृतियां प्रकट होतीं, न जाने वे कुत्ते होते या लोग, प्यारे से, पर अनबूझ चेहरे, उनके प्रकट होते ही मौसी दुम हिलाने लगती और उसे लगता कि उसने उन्हें कहीं देखा है, कि वह उन्हें प्यार करती थी... नींद आने लगती, तो उसे लगता कि इन आकृतियों से सरेस, छीलन और वार्निश की गंध आती है।

जब वह नए जीवन की बिल्कुल आदी हो गई और मरियल सी लेंगी के बजाय ऐसी मोटी-तगड़ी कुतिया बन गई, जिसकी अच्छी तरह देखभाल होती है, तो पाठ से पहले एक दिन मालिक ने उसे सहलाया और बोला:

"मौसी, अब कुछ काम करना चाहिए। बहुत निठल्ली बैठ लीं तुम। मैं तुम्हें कलाकार बनाना चाहता हूं... बनोगी कलाकार?"

और वह उसे कई चीज़ें सिखाने लगा। पहले पाठ में उसने पिछली टांगों पर खड़े होना और चलना सीखा। मौसी को यह बहुत अच्छा लगा। दूसरे पाठ में उसे पिछले पंजों पर कूदकर मालिक के हाथ से चीनी की डली लेनी थी, जो वह उसके सिर के काफ़ी ऊपर हाथ में पकड़े हुए था। फिर अगले पाठों में उसने नाचना, बागडोर पर दौड़ना, बाजे के साथ आवाज़ें निकालना, घंटी बजाना और पिस्तौल चलाना सीखा। महीने भर बाद वह आराम से मिस्री पिरामिड में फ्योदर तिमफ़ेइच का स्थान ले सकती थी। वह बड़ी तत्परता से सब कुछ सीखती और अपनी सफलता पर खुश थी। जीभ निकालकर बागडोर

पर दौड़ना, छल्ले में कूदना और बूढ़े फ्योदर तिमफ़ेइच की सवारी करना इस सब में उसे बड़ा मज़ा आता था। जब भी कोई तमाशा वह अच्छी तरह कर लेती, तो खुशी से ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगती, उस्ताद भी हैरान होता, खुशी से झूम उठता और कहता :

"वाह! क्या कमाल है! क्या कमाल है! तुम ज़रूर लाजवाब रहोगी, मौसी! कमाल है!"

मौसी "कमाल" शब्द की भी इतनी आदी हो गई कि हर बार जब मालिक यह शब्द कहता, तो वह उछलकर खड़ी हो जाती, इधर-उधर देखती, मानो यह उसका नाम हो।

## ६. बेचैनी भरी रात

मौसी ने कुत्तों का सपना देखा कि जमादार लंबे डंडे वाला झाड़ू लिए उसका पीछा कर रहा है और डर के मारे उसकी आंख खुल गई।

अंधेरे कमरे में सन्नाटा था और बहुत उमस थी। पिस्सू काट रहे थे। मौसी को पहले कभी भी अंधेरे से डर नहीं लगा था, अब न जाने क्यों वह भयभीत हो उठी थी और भौंकने को मन हो रहा था। पास के कमरे में मालिक ने ज़ोर से उसांस भरी, फिर थोड़ी देर बाद सूअर अपनी कोठरी में घुरघुराया और फिर से सन्नाटा छा गया। खाने की बात सोचो, तो मन को चैन मिलता है, सो मौसी यह सोचने लगी कि कैसे उसने आज फ्योदर तिमफ़ेइच के खाने में से मुर्गी की टांग चुरा ली थी और बैठक में अल्मारी और दीवार के बीच छिपा दी थी, जहां ढेर सारी धूल और मकड़ी का जाला है। अच्छा हो, जाकर देख आए : वह टांग सही-सलामत है कि नहीं? हो सकता है, मालिक को वह मिल गई हो और वह उसे खा गया हो। पर सुबह होने से पहले वह कमरे से बाहर नहीं निकल सकती – ऐसा यहां का नियम है। मौसी ने आंखें मूंद लीं, ताकि जल्दी से सो जाए। वह अपने अनुभव से जानती थी कि जितनी जल्दी सो जाओ, उतनी ही जल्दी सुबह हो जाती है। पर अचानक उससे थोड़ी ही दूर कहीं अजीब सी चीख हुई, जिससे वह कांप उठी और चारों पैरों पर खड़ी

हो गई। यह इवान इवानिच चीखा था, पर उसकी चीख हमेशा की तरह बक्की की विश्वास भरी चीख नहीं थी, यह तो कोई तीखी, डरावनी, अस्वाभाविक चीख थी, जैसे फाटक खोले जाने पर चरमराता है। अंधेरे में मौसी को न कुछ दिखा, न समझ में आया, उसका डर और भी ज़्यादा बढ़ गया और वह धीरे से गुर्राई।

कुछ समय बीता, इतना ही जितना अच्छी हड्डी को चिचोड़ने के लिए चाहिए; चीख फिर नहीं सुनाई दी। मौसी धीरे-धीरे निश्चिंत हो गई और ऊंघने लगी। उसे सपने में दो बड़े, काले-काले कुत्ते दिखे, जिनके पुट्ठों और बगलों पर पिछले साल के बालों के गुच्छे थे; वे लकड़ी के बड़े से टब में से गंदले पानी में मिल ली जूठन खा रहे थे। टब में से सफ़ेद भाप उठ रही थी और ज़ायक़ेदार गंध आ रही थी; कभी-कभी कुत्ते मुड़कर उसकी ओर देखते, खीसें निपोड़ते और गुर्राते: "तुझे तो नहीं देंगे!" पर घर में से भेड़ की खाल का ओवरकोट पहने जमादार निकला और उसने चाबुक से उन्हें भगा दिया; तब मौसी टब के पास गई और खाने लगी, पर जैसे ही जमादार फाटक से बाहर गया, दोनों काले कुत्ते गुर्राते हुए उस पर टूट पड़े, अचानक फिर तीखी चीख सुनाई दी।

"कैं-कैं-कैं!" इवान इवानिच चिल्लाया।

मौसी जाग गई, उछली और गद्दे पर खड़ी-खड़ी ही हूकने लगी। उसे लग रहा था कि यह इवान इवानिच नहीं, कोई दूसरा, बाहर का कोई चिल्ला रहा है। कोठरी में भी सूअर फिर से घुरघुराया।

जूतों के घिसटने की आवाज़ सुनाई दी और गाउन पहने, हाथ में मोमबत्ती पकड़े मालिक अंदर आया।

टिमटिमाती रोशनी मैले दीवारी कागज़ और छत पर नाचने लगी और उसने अंधेरे को भगा दिया। मौसी ने देखा कि कमरे में कोई बेगाना नहीं है। इवान इवानिच फ़र्श पर बैठा था, सो नहीं रहा था। उसके पंख फैले हुए थे और चोंच खुली थी, उसकी शक्ल-सूरत से लगता था मानो वह बहुत थक गया हो और उसे प्यास लगी हो। बूढ़ा फ्योदर तिमफ़ेइच भी नहीं सो रहा था। हो न हो, वह भी चीख से जाग गया होगा।

"इवान इवानिच, क्या हुआ तुम्हें?" मालिक ने हंस से पूछा। "क्यों चीख रहे हो? बीमार हो क्या?"

हंस चुप था। मालिक ने उसकी गर्दन और पीठ सहलाई और बोला: "कैसा सनकी है भई तू। ख़ुद भी नहीं सो रहा, दूसरों को भी नहीं सोने देता।"

मालिक चला गया, अपने साथ रोशनी ले गया, और फिर से अंधेरा घिर आया। मौसी को डर लग रहा था। हंस चीख नहीं रहा था, पर उसे फिर यह लगने लगा कि अंधेरे में कोई बेगाना खड़ा है। सबसे डरावनी बात तो यह थी कि इस बेगाने को काटा नहीं जा सकता था, क्योंकि वह अदृश्य था और उसकी कोई आकृति न थी। न जाने उसे क्यों यह ख़्याल आ रहा था कि आज रात को ज़रूर कोई बुरी बात होगी। फ़्योदर तिमफ़ेइच भी शांत नहीं था। मौसी को सुनाई दे रहा था कि कैसे वह अपने गद्दे पर करवटें बदल रहा है, जम्हाइयां ले रहा है और सिर झटक रहा है।

बाहर कहीं किसी ने फाटक खटखटाया और कोठरी में सूअर घुरघुराया। मौसी किकियाने लगी, अगली टांगें सामने बढ़ा दीं और उनपर सिर रख लिया। फाटक पर हुई खटखट, न जाने क्यों सो न रहे सूअर की घुरघुराहट, यह अंधेरा और सन्नाटा – इस सबमें उसे वैसा ही कुछ उदासी भरा और भयावह लग रहा था, जैसा इवान इवानिच की चीख में था। सब कुछ बेचैन, परेशान था। क्यों? कौन है यह बेगाना, जो दिखाई नहीं देता? मौसी के पास क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिंगारियां चमकीं। उनकी सारी जान-पहचान के दौरान पहली बार फ़्योदर तिमफ़ेइच मौसी के पास आ बैठा था। उसे क्या चाहिए? मौसी ने उसका पंजा चाटा और यह पूछे बिना कि वह क्यों आया है, हौले से, तरह-तरह की आवाज़ निकालते हुए हूकने लगी।

"कैं-कैं!" इवान इवानिच चीखा। "कैं-कैं!"

फिर से दरवाज़ा खुला और मोमबत्ती लिए मालिक अंदर आया। हंस पहले जैसी मुद्रा में ही चोंच खोले, पंख फैलाए बैठा था। उसकी आंखें बंद थीं।

"इवान इवानिच!" मालिक ने आवाज़ दी।

हंस हिला-डुला नहीं। मालिक उसके सामने फ़र्श पर बैठ गया, पल भर चुपचाप देखता रहा और बोला:

"इवान इवानिच! क्या हुआ? मर रहा है तू क्या? ओह, अब मुझे याद आया," उसने अपना सिर पकड़ लिया। "मुझे पता है, यह सब क्यों हो रहा है। आज तू घोड़े के पैर तले आ गया था न, इसीलिए! हे भगवान! हे भगवान!"

मौसी की समझ में नहीं आ रहा था कि मालिक क्या कह रहा है। पर उसके चेहरे से वह देख रही थी कि उसे किसी बहुत ही बुरी बात के होने की आशंका है। उसने अंधेरी खिड़की की ओर थूथनी बढ़ाई। उसे लग रहा था कि उसमें से कोई बेगाना झांक रहा है, और वह हूकने लगी।

"वह मर रहा है, मौसी!" मालिक ने कहा और हाथ ऊपर को उठाकर झटके। "हां, हां, मर रहा है। तुम्हारे कमरे में मौत आ गई है। क्या करें हम?"

मालिक का चेहरा पीला पड़ गया था। वह घबराया हुआ था। गहरी सांसें भरते और सिर हिलाते हुए वह अपने सोने के कमरे में चला गया। मौसी को अंधेरे में रहते डर लग रहा था, सो वह भी उसके पीछे चल दी। पलंग पर बैठकर मालिक ने कई बार कहा:

"हे भगवान, क्या करें?"

मौसी उसके पैरों के पास चक्कर काट रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसका मन इतना उदास क्यों है, क्यों सब इतने परेशान हो रहे हैं। यह सब समझने की कोशिश में वह मालिक की हर हरकत को ग़ौर से देख रही थी। फ़्योदर तिमफ़ेइच विरले ही कभी अपना गद्दा छोड़ता था, अब वह भी मालिक के कमरे में आ गया और उसके पैरों के पास लोटने लगा। वह रह-रहकर यों सिर झटकता, मानो उसमें से कोई बुरा विचार निकाल डालना चाहता हो, और पलंग के नीचे यों झांक रहा था, जैसे कि वहां कुछ हो। मालिक ने रकाबी ली, कमरे में लगे हाथ धोने के छोटे से ड्रम में से पानी उसमें डाला और फिर से हंस के पास गया।

"इवान इवानिच, लो, पी लो," उसके सामने रकाबी रखते हुए उसने लाड़ से कहा। "पी ले, भैया।"

पर इवान इवानिच हिल-डुल नहीं रहा था और न ही आंखें खोल रहा था। मालिक ने उसका सिर रकाबी पर झुकाया और चोंच पानी में डाली,

पर हंस नहीं पी रहा था। उसने पंख और भी फैला दिए और उसका सिर रकाबी पर रखा रह गया।

"नहीं, अब कुछ नहीं किया जा सकता!" मालिक ने उसांस ली। "सब ख़त्म हो गया। गया इवान इवानिच!"

और उसके गालों पर चमकीली बूंदें नीचे ढरकने लगीं, वैसी ही बूंदें, जैसी बारिश के समय खिड़कियों पर होती हैं। मौसी और फ़्योदर तिमफ़ेइच कुछ नहीं समझ पा रहे थे, मालिक से सटे जा रहे थे और भयभीत से हंस को देख रहे थे।

"बेचारा इवान इवानिच!" ठंडी सांस भरते हुए मालिक कह रहा था। "मैं तो सोच रहा था कि बसंत में तुझे दाचा पर ले जाऊंगा और हरी-हरी घास पर तेरे साथ घूमूंगा। मेरे प्यारे जानवर, मेरे अच्छे साथी, तू अब नहीं रहा! तेरे बिना मैं क्या करूंगा?"

मौसी को लग रहा था कि उसके साथ भी ऐसा ही होगा, यानी वह भी ऐसे ही, न जाने क्यों आंखें बंद कर लेगी, टांगें फैला देगी, मुंह खोल लेगी और सब भयभीत से उसे देखेंगे। प्रत्यक्षतः फ़्योदर तिमफ़ेइच के दिमाग़ में भी ऐसे ही विचार घूम रहे थे। बूढ़ा बिल्ला इससे पहले कभी भी इतना मायूस और निराश नज़र नहीं आया था।

पौ फट रही थी। छोटे कमरे में अब वह अदृश्य बेगाना नहीं था, जिससे मौसी को इतना डर लग रहा था। जब बिल्कुल उजाला हो गया, तो जमादार आया, हंस के पंजे पकड़कर उसे कहीं ले गया। थोड़ी देर बाद बुढ़िया आई और टब ले गई।

मौसी बैठक में गई और अल्मारी के पीछे झांककर देखा: मालिक ने मुर्ग़ी की टांग नहीं खाई थी, वह अपनी जगह पर ही, जाले और धूल में पड़ी हुई थी। पर मौसी का मन उखड़ा हुआ था, उसे रोना आ रहा था। उसने टांग को सूंघा भी नहीं, सोफ़े तले जाकर बैठ गई और पतली सी आवाज़ में किकियाने लगी।

## ७. और तमाशा फ़ेल हो गया

एक शाम को मालिक मैले दीवारी कागज़ वाले कमरे में आया और हाथ रगड़ते हुए बोला :

"अच्छा जी ..."

वह और कुछ कहना चाहता था, पर कहे बिना ही बाहर चला गया। मौसी पाठों के दौरान उसके चेहरे और लहजे के उतार-चढ़ाव को समझना सीख गई थी, सो वह जान गई कि वह उत्तेजित और चिंतित है, लगता है, गुस्से में भी है। थोड़ी देर बाद वह लौटा और बोला :

"आज मैं मौसी और फ्योदर तिमफ़ेइच को अपने साथ ले जाऊंगा। मिस्री पिरामिड में मौसी आज इवान इवानिच का स्थान लेगी। ओफ़, क्या है यह सब ! कुछ तैयार नहीं, सीखा नहीं गया, रिहर्सलें कम हुई हैं ! बदनाम हो जाएंगे, तमाशा फ़ेल हो जाएगा !"

वह फिर से बाहर चला गया और मिनट भर बाद ही फ़र का ओवरकोट और ऊंचा टोप पहने लौट आया। बिल्ले के पास जाकर उसने अगली टांगों से उसे पकड़ा और उठाकर अपने ओवरकोट तले छाती पर छिपा लिया। फ्योदर तिमफ़ेइच इस सबसे बिल्कुल उदासीन लगता था, यहां तक कि उसने आंखें भी नहीं खोलीं। प्रत्यक्षतः, उसके लिए सब बराबर था: वह लेटा रहे या उसे टांगें पकड़कर उठा लिया जाए, गद्दे पर लेटा रहे या मालिक की छाती पर ओवरकोट तले दुबका रहे।

"मौसी, चलो," मालिक ने कहा।

कुछ भी समझे बिना और दुम हिलाते हुए मौसी उसके पीछे चल दी। पल भर बाद ही वह स्लेज गाड़ी में मालिक के पांवों में बैठी थी और सुन रही थी कि कैसे वह ठंड से सिकुड़ता हुआ और घबराता हुआ बुदबुदा रहा था :

"बदनाम हो जाएंगे ! तमाशा फ़ेल हो जाएगा !"

स्लेज गाड़ी एक बहुत बड़े, अजीब से मकान के पास रुकी, जो औंधे पड़े डोंगे जैसा था। उस में शीशे के तीन दरवाज़े थे, जो दर्जन भर बत्तियों से जगमगा रहे थे। दरवाज़े शोर करते हुए खुलते और मुंहों की तरह वहां

आ-जा रहे लोगों को निगल जाते। यहां लोग बहुत थे, कई घोड़े आकर रुक रहे थे, पर कुत्ते कहीं नज़र न आते थे।

मालिक ने मौसी को उठाया और ओवरकोट के नीचे घुसेड़ लिया, जहां फ़्योदर तिमफ़ेइच पहले से ही बैठा हुआ था। वहां अंधेरा और उमस थी, पर गरमाहट भी। क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिंगारियां चमकीं – कुतिया के ठंडे, सख़्त पंजों से परेशान होकर बिल्ले ने आंखें खोली थीं। मौसी ने उसका कान चाटा, आराम से बैठने की फ़िक्र में वह कुलबुलाने लगी, बिल्ले को अपने ठंडे पंजों तले दबा दिया, अनजाने में सिर ओवरकोट से बाहर निकाल लिया, पर तुरंत ही गुर्राई और फिर से अंदर घुस गई। उसे लगा कि उसने एक विशाल कमरा देखा है, जिसमें बहुत कम रोशनी है। कमरा अजीब-अजीब से भयानक जीवों से भरा हुआ था ; कमरे के दोनों ओर बाड़ों और पिंजड़ों के पीछे से डरावने थूथने दिख रहे थे : घोड़ों के, सींगोंवाले, लमकन्ने और एक बहुत ही बड़ा, मोटा थूथना, जिस पर नाक की जगह पूंछ थी और मुंह से दो चिचोड़ी हुई हड्डियां निकली हुई थीं।

बिल्ले ने मौसी तले फटी-फटी आवाज़ में म्याऊं की, पर तभी ओवरकोट खुल गया, मालिक ने कहा "हप!" और मौसी तथा फ़्योदर तिमफ़ेइच नीचे कूद गए। वे अब एक छोटे से कमरे में थे, जिसकी मटमैली सी दीवारें लकड़ी के पटरों की बनी हुई थीं। यहां एक छोटी सी शीशे वाली मेज़, एक स्टूल और कोनों में टंगे कपड़ों के अलावा और कुछ भी नहीं था। लैम्प या मोमबत्ती की जगह पंखेनुमा तेज़ बत्ती जल रही थी, जो दीवार में गड़ी एक नली पर लगी हुई थी। फ़्योदर तिमफ़ेइच ने अपने रोयें चाटे, जो मौसी तले दब गए थे और जाकर स्टूल के नीचे लेट गया। अभी भी घबराते और हाथ रगड़ते हुए मालिक कपड़े उतारने लगा... उसने सिर्फ़ ओवरकोट या कोट ही नहीं उतारा, बल्कि इस तरह कपड़े उतारे जैसे कि वह घर पर कम्बल तले लेटने से पहले उतारता था, यानी वह सिर्फ़ अंतरीय पहने रहा – पूरी बांहों की बनियान और तंग पायजामा। फिर वह स्टूल पर बैठ गया और शीशे में देखते हुए अपने आप को न जाने क्या-क्या करने लगा – देखकर आश्चर्य होता था। सबसे पहले उसने सिर पर नकली बालों का विग पहना, जिसके बीचोंबीच मांग थी और दोनों

ओर बालों से सींग से बने हुए थे, फिर उसने चेहरे पर सफ़ेद सा कुछ पोत लिया और सफ़ेद रंग के ऊपर भौंहें, मूंछें और लाली बनाई। इतने में ही उसके तमाशे खत्म नहीं हुए। चेहरे और गर्दन को लीप-पोतकर वह बहुत ही अजीबो-गरीब पोशाक पहनने लगा। मौसी ने पहले कभी भी न घर पर और न ही सड़क पर किसी को ऐसे कपड़े पहने देखा था। कल्पना कीजिए बोरे जैसी खुली पतलून की, जो बड़े-बड़े फूलोंवाले छींट के कपड़े की बनी हुई थी। ऐसा कपड़ा शहरों के आम घरों में पर्दों के लिए और फ़र्नीचर पर चढ़ाने के काम आता है। पतलून बगलों तक ऊंची थी; उसका एक पायंचा कत्थई छींट का था और दूसरा चमकीली पीली छींट का। पतलून में समाकर मालिक ने ऊपर से छींट का सिंघाड़ेदार कालर वाला कुर्ता पहना, जिसकी पीठ पर सुनहरा सितारा बना हुआ था; अलग-अलग रंग के मोज़े पहने और फिर हरी जूतियां।

मौसी तो चकाचौंध हो गई। सफ़ेद मुंह वाली बोरे जैसी आकृति से मालिक की गंध आती थी, उसकी आवाज़ भी जानी-पहचानी, मालिक जैसी ही थी, मगर ऐसे क्षण भी आते जब मौसी के मन में संदेह उठने लगता। तब उसका जी होता इस भड़कीली आकृति से दूर भागे और भौंकने लगे। नई जगह, पंखेनुमा बत्ती, नई गंधें, मालिक के साथ हुआ कायाकल्प – इस सबसे उसके मन में अजीब सा डर समा रहा था और उसे लग रहा था कि ज़रूर उसका सामना किसी डरावने जीव से होगा, जैसे कि नाक की जगह दुम वाला मोटा थूथना। ऊपर से दीवार के पीछे दूर कहीं वह बैंड-बाजा बज रहा था, जिसे मौसी सह नहीं सकती थी और कभी-कभी अनबूझ दहाड़ भी सुनाई देती। बस फ्योदर तिमफ़ेइच को एकदम निश्चिंत पड़े देखकर ही उसका थोड़ा ढाढ़स बंध रहा था। वह मज़े में स्टूल के नीचे लेटा ऊंघ रहा था, जब स्टूल हिलता तब भी वह आंखें नहीं खोलता था। सफ़ेद वास्कट और लंबा काला कोट पहने एक आदमी ने अंदर झांककर देखा और कहा:

"अभी मिस अराबेला जा रही हैं। उसके बाद आपकी बारी है।"

मालिक ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने मेज़ के नीचे से बड़ा अटैची निकाला और बैठकर इंतज़ार करने लगा। उसके हाथों और होंठों से साफ़ लग रहा था कि वह घबरा रहा है, मौसी उसकी कांपती सांस सुन रही थी।

"मि० जार्ज, चलिए!" दरवाज़े के पीछे से किसी ने आवाज़ दी।

मालिक उठा, छाती पर तीन बार सलीब का निशान बनाया, फिर स्टूल के नीचे से बिल्ले को निकाला और अटैची में घुसेड़ दिया।

"चलो, मौसी!" मालिक ने हौले से कहा।

मौसी कुछ नहीं समझी, मालिक के पास आ गई; उसने मौसी का सिर चूमा और उसे फ़्योदर तिमफ़ेइच के पास रख दिया। और फिर अंधेरा छा गया... मौसी बिल्ले को दबा रही थी, अटैची को खरोंच रही थी, डर के मारे उसके मुंह से आवाज़ नहीं निकल रही थी, अटैची यों हिल रहा था, मानो लहरों पर उछल रहा हो...

"लो जी मैं आ गया!" मालिक ज़ोर से चिल्लाया। "लो जी मैं आ गया!"

मौसी ने महसूस किया कि इस चीख के बाद अटैची किसी सख़्त चीज़ से टकराया और फिर उसका हिलना-डुलना बंद हो गया। ज़ोर से चिंघाड़ने की आवाज़ आई: किसी को थपथपाया जा रहा था और यह कोई, शायद नाक की जगह दुम वाला थूथना इतनी ज़ोर से चिंघाड़ रहा था कि अटैची का ताला खड़खड़ा उठा। चिंघाड़ के जवाब में मालिक बारीक, तीखी आवाज़ में हंसा; घर पर वह कभी भी ऐसे नहीं हंसता था।

"हा-हा-हा!" चिंघाड़ को दबाने की कोशिश करते हुए वह चिल्लाया। "साहेबान मेहरबान! मैं सीधा स्टेशन से आ रहा हूं। मेरी नानी इस दुनिया से चलती बनी है और मेरे लिए यह बक्सा छोड़ गई है! बड़ा भारी है, हो न हो सोने से भरा होगा... हा-हा-हा! अभी देखते हैं कितने लाख हैं इसमें!"

अटैची का ताला चटका। मौसी की आंखें तेज़ रोशनी से चुंधिया गईं; वह उछलकर अटैची से बाहर निकली, शोर-गुल से बौखला गई और बड़ी तेज़ी से मालिक के इर्द-गिर्द दौड़ने लगी, ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगी।

"धत् तेरे की!" मालिक चिल्लाया। "फ़्योदर तिमफ़ेइच! मौसी! आ गए मेरे प्यारे रिश्तेदार! भाड़ में जाओ तुम!"

वह पेट के बल रेत पर गिर गया, बिल्ले और मौसी को पकड़ लिया, उन्हें बांहों में भरने, गले लगाने लगा। जब वह उसे अपने आलिंगन में कस रहा था तो मौसी ने जल्दी से एक नज़र उस दुनिया पर डाली, जहां क़िस्मत

उसे ले आई थी। उसकी भव्यता पर वह आश्चर्यचकित और विमुग्ध हो गई, पल भर को स्तब्ध रह गई, फिर मालिक के हाथों से निकल भागी और इन छापों के तीव्र प्रभाव में लट्टू की तरह घूमने लगी। नई दुनिया विशाल थी और तेज़ प्रकाश से भरपूर; जिधर भी नज़र डालो, फ़र्श से छत तक चेहरे ही चेहरे थे, चेहरे ही चेहरे बस और कुछ नहीं।

"मौसी, तशरीफ़ रखो!" मालिक चिल्लाया।

मौसी को याद था कि इसका क्या अर्थ है। वह तुरंत उछलकर कुर्सी पर चढ़कर बैठ गई। उसने मालिक की ओर देखा। उसकी आंखें सदा की तरह गम्भीर और स्नेह भरी थीं, किंतु चेहरा और ख़ास तौर पर मुंह और दांत चौड़ी, जड़ मुस्कान से विकृत थे। वह ठहाके मारकर हंस रहा था, उछल-कूद रहा था, कंधे बिचका रहा था और यह दिखा रहा था कि हज़ारों लोगों की उपस्थिति में उसे बड़ा मज़ा आ रहा है। मौसी ने उसके उल्लास पर विश्वास कर लिया, सहसा अपने रोम-रोम से उसे यह आभास हुआ कि ये हज़ारों चेहरे उसे देख रहे हैं, उसने लोमड़ी जैसी अपनी थूथनी ऊपर उठाई और ख़ुशी से किकियाने लगी।

"मौसी आप यहां बैठिए," मालिक ने कहा। "हम फ़्योदर तिमफ़ेइच के साथ थोड़ा नाच लें।"

फ़्योदर तिमफ़ेइच उदासीनता से इधर-उधर देखता हुआ इस प्रतीक्षा में खड़ा था कि कब उसे ये बेवकूफ़ी भरी हरकतें करने को कहा जाएगा। वह अनमना सा, लापरवाही से नाच रहा था, उसकी गतियों, उसकी दुम और मूंछों से यह साफ़ दिख रहा था कि वह इस भीड़ और सारी रौनक को तुच्छ मानता था, मालिक और उसका अपना तमाशा उसके लिए छिछोरा था... अपने हिस्से का नाच नाचकर उसने जम्हाई ली और बैठ गया। मालिक बोला:

"हां, तो मौसी, चलो, हम पहले गाएंगे और फिर नाचेंगे। अच्छा?"

उसने जेब से बांसुरी निकाली और बजाने लगा। मौसी संगीत नहीं सह सकती थी, वह बेचैनी से कुलबुलाने लगी और हूकने लगी। चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट और कोलाहल सुनाई दिया। मालिक ने झुककर सलाम किया और जब सब शांत हो गया तो फिर से बांसुरी बजाने लगा... बांसुरी

बहुत ऊंची तान में बज रही थी, जब ऊपर कहीं दर्शकों में किसी ने आश्चर्य के साथ ज़ोर से आह भरी।

"बापू!" बाल स्वर चिल्लाया। "यह तो लाखी है!"

"लाखी है ही!" नशे से कांपते पुरुष स्वर ने हामी भरी। "हां, लाखी है! फ़ेद्युश्का, खुदा की मार पड़े, यह तो लाखी ही है! पुच-पुच-पुच!"

गैलरी में किसी ने सीटी बजाई, और दो स्वर, एक बच्चे का और एक पुरुष का ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे:

"लाखी! लाखी!"

मौसी ठिठक गई, उसने उधर देखा जिधर से चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी। दो चेहरे: एक बालोंवाला, नशे में मुस्कराता हुआ और दूसरा – गोल-मटोल, लाल और सहमा सा – उसकी आंखों में वैसे ही चौंध गए, जैसे पहले तेज़ प्रकाश चौंधा था।

उसे याद हो आया, वह कुर्सी से गिर पड़ी, रेत पर लोटने लगी, फिर उठी और खुशी से किकियाती हुई इन चेहरों की ओर दौड़ चली। कर्णभेदी कोलाहल हुआ, जिसमें ज़ोर-ज़ोर की सीटियां और एक बच्चे की तीखी चीख साफ़ सुनाई दे रही थीं:

"लाखी! लाखी!"

मौसी ने उछलकर रिंग की मुंडेर पार की, फिर किसी के कंधे के ऊपर से होती हुए बॉक्स में पहुंच गई; अगली कतार में पहुंचने के लिए ऊंची दीवार लांघनी चाहिए थी; मौसी कूदी, पर ऊपर तक न पहुंच पाई, दीवार पर नीचे फिसलने लगी। फिर वह एक हाथ से दूसरे हाथ में जाने लगी, कई हाथ, चेहरे चाटती हुई ऊपर ही ऊपर बढ़ती गई और आखिर गैलरी में पहुंच गई।

आधे घंटे बाद लाखी सड़क पर उन लोगों के पीछे जा रही थी, जिनसे सरेस और वार्निश की गंध आ रही थी। लुका अलेक्सान्द्रिच लड़खड़ा रहा था, पर उसे इतना अनुभव था कि उसके पांव उसे अपने आप ही नाली से दूर-दूर लिए जा रहे थे।

"पाप के गरत में लोटा मेरे गरभ में..." वह बड़बड़ा रहा था। "अरी

लाखी, तू तो बस एक भूल है। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौड़ी का बढ़ई।"

उसके साथ-साथ फ़ेद्युश्का बाप का टोप पहने चल रहा था। लाखी उनकी पीठों को देख रही थी और उसे लग रहा था कि वह न जाने कब से उनके पीछे चल रही है और ख़ुश हो रही है कि जीवन का क्रम पल भर को भी नहीं टूटा।

मैले दीवारी कागज़ वाला कमरा, हंस, फ़्योदर तिमफ़ेइच, स्वादिष्ट खाना और सरकस–यह सब उसे याद आया, पर अब यह एक लंबा, उलझा-पुलझा सपना ही लग रहा था।